न तनख्वाह, न पद फिर भी...

पेज एक का शेष

कराने से लेकर ऊपर से आने वाली चिट्ठियों का जवाब और रिपोर्ट तैयार करने के साथ ही वार्ड के विकास कार्यों के लिए ठेकेदारों से संपर्क वही करता है।

जाहिर सी बात है कि वीर सिंह बिना वेतन इस पद पर कोई समाजसेवा के लिए तो काम कर नहीं रहा है। अधिकारियों का वरदहस्त होने के कारण अपना और ऊपर वालों का खर्चा वह यही काम करते हुए निकाल रहा है, तभी तो आज तक बेताज बादशाह की तरह टिका हुआ है।

निगम आयुक्त मोना ए श्रीनिवास वैसे तो नगर निगम की व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए 'सख्त' कदम उठा रही हैं, जैसे कि हाल ही में तिगांव विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों की रणनीति बनाने के दौरान एक जेई ने उन्हें 'फलां' ठेकेदार को काम देने की नसीहत दी तो उन्होंने जेई को उसकी औकात बताते हुए कहा कि किसे काम देना है किसे नहीं मुझे न बताओ, ढंग से नौकरी कर लो नहीं तो नौकरी नहीं रहेगी। लगता है कि अभी मोना ए श्रीनिवास को बिना पद और वेतन के जेई बन कर काम कर रहे वीर सिंह के बारे में जानकारी नहीं हुई है अन्यथा वह कार्रवाई अवश्य करतीं।

बिना वेतन के सरकारी पद पर रहने का अर्थ बड़ा स्पष्ट है। अक्सर कहते सुना जाता है कि मुझे थानेदार लगा दो तनख्वाह की जरूरत नहीं है, मुझे तहसीलदार लगा दो तनख्वाह की जरूरत नहीं है अथवा मुझे फलां फलां पद पर लगा दो तनख्वाह तो उल्टे सरकार मुझसे ले लिया करे।

इस तरह के जुमलों को मूर्त रूप प्रदान कर रहे हैं जेई वीर सिंह। यदि निगमायुक्त मोना ए श्रीनिवास अभी तक इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं तो यह उनकी काबिलियत पर प्रश्नचिह्न है यदि वे यह सब जानती हैं तो उनकी भी हिस्सा पत्ती होने से इनकार नहीं किया जा सकता। यदि मोना श्रीनिवास वास्तव में ईमानदार और काबिल अफसर है तो वीर सिंह को इम्परसोनेशन के जुर्म में गिरफ्तार कर जेल भिजवा देती और साथ में उसके पैरोकार एसआई ओमबीर को भी लपेटती।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421

ईमानदारी, सुशासन गुल, भ्रष्टाचार फुल!

करनाल (बागी) सीएम सिटी के बहुचर्चित "सरकारी राशन हड़पो" घोटाले को लेकर नित नए खुलासे हो रहे हैं, लेकिन डीएफएससी कार्यालय "जांच जारी" की आड़ में मामले को दबाने में लगा हुआ है। यही कारण है कि अभी तक न तो जांच आगे बढ़ी है और न कोई ठोस कार्रवाई हुई।

घोटाले की जांच में जानबूझ कर दिन प्रतिदिन विलंब किया जा रहा है, जबकि घोटाले की सच्चाई सामने लाने के लिए जनता सड़को पर उतर चुकी है। जागरुक नागरिक और जनता की सरकार और प्रशासन के सामने तमाम चीखो पुकार, मीडिया से रूबरू होने और फरियादी पत्राचार व ज्ञापनबाजी के बावजूद कोई सुनवाई नहीं है। मामले में इंसाफ के लिहाज से जनता चौराहे पर दोनों हाथ खाली खड़ी है। उसकी आवाज अभी तक नक्कारखाने में तूती की आवाज़ साबित हुई है।

कहने को तो करनाल,सीएम सिटी है, अब खुद ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि फरियादी गरीब जनता के ये बदतर हालात सीएम सिटी में ही हो रहे हैं। पूरा का पूरा निज़ाम गरीबों के पक्ष में एक्शन लेने की बजाए, उल्टे भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारियों के सामने न जाने क्यूं इतनी बेबसी व लाचारगी से औंधे मुंह धराशायी पड़ा है?

ताजा शिकायतों में गरीब जनता का राशन हड़पने के आरोप कुख्यात राशन हड़पो आरोपी विपिन मित्तल पर लगाए गए हैं। सरकारी राशन वितरण प्रणाली व तंत्र की

कार्यशैली पर भी गंभीर सवाल उठाए गए हैं। जनहित में ये ताजा शिकायत करनाल के डीसी, डीएफएससी के साथ ही निदेशक, खाद्य आपूर्ति, उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला (मंत्री) और डीजीपी विजिलेंस से मशीन नंबर 118, 191, 180 की जांच की मांग को लेकर की गई है ! ये तीनों मशीने विपिन मित्तल (कथित नॉमिनी रेनू बाला, राजीव पुरम, करनाल) के नियंत्रण में राशन डिपो घोटाले का जरिया बताई जा रही हैं! फरियाद में इन्हें खंगालने की मांग की गई है ! सूत्रों के अनुसार इस जांच में सरकारी तंत्र की भ्रष्टाचारनवाजी एवं मिलीभगत पूर्ण कुप्रणाली की पोल खुलने की भी पूरी पूरी उम्मीद है, बशर्ते जांच निष्पक्ष हो। गरीब जनता इंसाफ पाने के लिए सड़कों पर आंदोलनरत है।

गणेशोत्सव का इतिहास और हमारा समाज

देश भर में गणेशोत्सव की धूम है, लेकिन आप अपने विवेक के साथ सोचिए क्या गणेश की कहानी सत्य हो सकती है। मुझे तो यह पूरी तरह काल्पनिक लगती है क्योंकि कोई भी व्यक्ति मैल से कैसे पैदा हो सकता है। इस कहानी में एक महिला (पार्वती) अपने शरीर की गंदगी से बच्चा बना देती है और वह कुछ समय में इतना बड़ा हो जाता है कि महिला का पति (शंकर) भी नहीं पहचान पाता है। जब वह बच्चा (गणेश) शंकर को घर के अंदर प्रवेश करने पर रोकता है तो शिव शंकर गुस्से से गणेश का सिर काट कर धड़ से अलग कर देता है। जब गणेश की मां पार्वती देखती है तब शंकर पर क्रोधित होकर कहती है- ये क्या अनर्थ किया तुमने अपने ही पुत्र को मार दिया। इसे जिन्दा करना होगा, नहीं तो हम सभी देवी मिलकर पूरी सृष्टि को नष्ट कर देंगी।

तब सभी देवता चिंतित होकर शिव से इस समस्या का समाधान करने को कहते हैं। फिर शंकर देवों को आज्ञा देता है कि दूसरे नवजात शिशु का सिर काट कर लाए। कोई नवजात शिशु नहीं मिलता तो हाथीके बच्चे का सिर काटकर ले आते हैं और शिव उसे गणेश के मृत शरीर में जोड़ देता है और गणेश पुन: जीवित हो जाता है। इस प्रकार की काल्पनिक कहानी पाखंडी लोगों ने गढ़ दी है और भोली-भाली जनता इस कहानी को सत्य मानकर नकली भगवान की पूजा कर रहे हैं।

पूरी तरह से अवैज्ञानिक और काल्पनिक

वैज्ञानिक दृष्टि से देखे तो किसी भी व्यक्ति के शरीर पर किसी भी जानवर का सिर नहीं जोड़ा जा सकता है। यहां तक जानवर के खून को मनुष्य के शरीर में नहीं डाला जा सकता है। मनुष्य के खून को दूसरे व्यक्ति के शरीर में डालने से पहले कौन सा ब्लड ग्रुप है उसकी सावधानी से जांच की जाती है, जब संभव हो तब खून को निकालकर बीमार व्यक्ति के शरीर में डाला जाता है।

हाथी का सिर और मनुष्य का धड़ को जोड़ना असंभव

चलो मान लेते हैं उस समय अज्ञानता के कारण बिना सोचे समझे हाथी का सिर गणेश के शरीर में जोड़ने का प्रयास किया होगा। लेकिन हाथी का सिर मनुष्य के सिर से बहुत बड़ा होता है, अगर तुरंत जन्म लिया हुआ हाथी का सिर भी एक मनुष्य का बच्चे में फिट किया जाए तो आकार में हाथी का सिर बड़ा होने के कारण सर्जरी करना असंभव होगा।

इसके अलावा और भी कई सवाल है। जैसे कोई भी व्यक्ति के चार हाथ कैसे हो सकते हैं? बहुत से देवी-देवताओं की तस्वीरों और मूर्तियों में आपने देखा होगा चार हाथ वाला दिख ही जाएगा। जिसमें एक गणेश की मूर्ति भी शामिल है। दुनिया में आज तक किसी मनुष्य को चार हाथ के नहीं देखा या पाया गया। सभी मनुष्य दो हाथ के ही है। इस प्रकार के चार हाथ और चार मुंह के भगवान काल्पनिक नहीं तो और क्या?

अब ये मत कहना कि भगवान के लिए कुछ असंभव नहीं। भगवान पर प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। ठीक है, मान लेते हैं भगवान बहुत शक्तिशाली है उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं है, तो आप बताएंगे कि शक्तिशाली, सर्वज्ञानी ईश्वर अपने ही पुत्र को क्यों नहीं पहचान सके। एक बच्चा गणेश जब शंकर को रोकता है, जिससे शिव क्रोध में आकर बच्चे को मार देता है, इतना क्रोधी है भगवान। उस समय उसकी बुद्धि कहां चली गई थी।

क्रोधित व्यक्ति को कैसे कह सकते हैं भगवान

इतना क्रोधित थे शिव कि गणेश को इतना बेरहमी से मारा जिससे उसका सिर पूरा नष्ट हो गया। जब भगवान है तो गणेश के नष्ट सिर को वापस भी ला सकता था, उसके लिए नामुमकिन नहीं होना चाहिए था। क्या जरूरत थी बेजुबान हाथी के बच्चे का सिर काटकर हत्या करने की? और वह भी तो किसी का बच्चा है। अपना स्वार्थ के लिए दूसरे के बच्चे (चाहे कोई जानवर ही क्यों न हो) की बलि देना गलत है। इसे कैसे भगवान कह सकते हैं?

शुरूआत कैसे हुई

गणेशोत्सव या गणेश पूजा की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई है। कहा जाता है कि गणेशोत्सव की नींव आजादी की लड़ाई के दौरान बाल गंगाधर तिलक ने रखी थी। 1894 में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तिलक ने पुणे में गणेश की मूर्ति स्थापित की। 10 दिन तक खूब पूजा-पाठ हुआ। बताया जाता है कि 11वें दिन जब गणेश की मूर्ति की यात्रा निकाली गई तो एक दलित व्यक्ति ने उसे प्रणाम करने के लिए छू दिया। इतने में ब्राम्हणों ने कहा कि गणपति अपवित्र हो गया। सभी पुजारी गंगाधर तिलक को गरियाते हुए कहने लगे कि देखा, गणपति को सार्वजनिक किया तो धर्म डूब गया। अब कौन ब्राह्मण इस मूर्ति को अपने घर में रखेगा? तभी तिलक ने कहा, अरे चिल्लाते क्यों हो? शांत रहो मैं धर्म को डूबने कैसे दूंगा? धर्म को डुबोने की अपेक्षा हम इस अपवित्र मूर्ति को ही डुबो देते हैं और इस प्रकार गणपति की मूर्ति को डुबो दिया गया। इसी दिन से यह गणेश विसर्जन का रिवाज चल पड़ा। यह पूरी तरह से शूद्रों का अपमान है, लेकिन यहीं शूद्र (एससी, एसटी, ओबीसी) बड़े हर्षोउल्लास के साथ अपने अपमान का त्योहार मनाते हैं।

मेहनत, समय, धन और प्रकृति की बर्बादी

गणेश की मूर्तियों को बनाने में बहुत ही ज्यादा समय, धन और मेहनत लगते हैं। बड़ी-बड़ी मूर्तियों को खरीदकर नदी में बहाने से समाज का कोई कल्याण नहीं होता, बल्कि देश और लोगों की आर्थिक स्थिति बद से बदतर हो जाती है। अगर इसी पैसों से लोग अपने घर और समाज के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूलभूत चीजों पर खर्च करते तो उनका बेहतर विकास होता। बड़ी-बड़ी मर्तियों से तालाब, नहर, नदियां और अन्य जल स्त्रोत पूरी तरह से बर्बाद होते जा रहे है। भगवान और धर्म की आड़ पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। गणेशोत्सव के दौरान पूरे 11 से 15 दिनों तक सड़कों पर धर्म की आड़ पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया जाता है।

जागरूक लोगों को लेनी होगी जिम्मेदारी

भगवान के नाम पर जोर-जोर से कानफोड़ू डीजे बजाया जाता है। यह आवाज सुनकर अगर भगवान होता तो आत्महत्या कर लेता। डीजे पर अश्लील गाने बजाते हुए भक्त गांजा, भांग और शराब के नशे में झूमते नजर आते है। सड़क पर कोई लड़की मिल जाए तो ये छेड़छाड़ करने में उतारू हो जाते हैं। इस प्रकार धर्म के नाम पर सड़क पर नगा नाच जारी है। शासन-प्रशासन पूरी तरह से आंख और कान बंदकर अपाहिज की तरह मौन है। सरकार को वोट बैंक की चिंता है, इसलिए जनता को धर्म की अफीम देकर मस्त है। सभी नेता भोली-भाली जनता को धर्म और भगवान जैसी काल्पनिक बातों पर उलझाकर सत्ता की मलाई खा रहे हैं। अब जागरूक लोगों को अपनी चुप्पी तोड़नी होगी और अपने समाज को विवेकवान बनाना होगा, तभी यह भेड़िया धसान खत्म होगी और हमारी पीढ़ी बेहतर होगी।

- मनोवैज्ञानिक टिकेश कुमार, अध्यक्ष, एंटी सुपरस्टीशन ऑर्गेनाइजेशन (ASO)